असरदार लाईनें

रचयिता

कवि हृदय सिद्धान्तज्ञ आचार्य विनम्रसागर

1

कृति

असरदार लाईनें

शुभाशीष :– जैनाचार्य श्री विरागसागर जी महाराज

रचयिता

प्रखर वक्ता आचार्य विनम्रसागर

2007 प्रथमावृत्ति : 2200 प्रति जयपुर
2016 द्वितीयावृत्ति : 2000 प्रति फिरोजाबाद

प्राप्ति स्थान :
सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ, भिण्ड
देवेन्द्र जैन, बड़ी बजरिया, बीना ((07580-223344)
सीपुर समता तीर्थ धाम, सीपुर, 9828613614

कम्प्यूटर डिजाइन एवं मुद्रक – मुकेश जैन 9414555103
आर्यन् एजेन्सीज्
इन्दिरा बाजार, अजमेरी गेट, जयपुर (राज.)

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

पुनः प्रकाशन हेतु व्यवस्था राशि – 15/–रु.मात्र

2

हमारी नजर में अनूठा व्यक्तित्व

आचार्य श्री विनम्रसागरजी महाराज का

प्रखर बुद्धि व श्रेष्ठ प्रतिभा के धनी परम पूज्य **आचार्य श्री विनम्रसागर जी** महाराज ने जन्म से ही प्रतिभा को अभिव्यक्त किया 5 वर्ष की उम्र में आप तीसरी क्लास में पढ़ते थे। पढ़ने में हमेशा अव्वल रहे मात्र 20 वर्ष की उम्र में (1984 में) आपकी एक विद्यालय में गवर्मेण्ट सर्विस लग गई थी 1986 में आपने एम.कॉम. जिला टॉप (दो विषय में विशेष योग्यता) प्राप्त करके प्रोफेसर पद के लिए तैयारी कर ली थी लेकिन एम.कॉम करने के बाद वही हुआ जो पुरुषार्थ लिखता है विधि ने वैराग्य की ओर मोड़ दिया और फिर विरक्त होकर सर्विस की तथा 8 अगस्त 1992 को सर्विस त्याग कर दी और 9 अगस्त 1992 को ऐलक बन गये तथा 8 जून 2003 को ललितपुर में मुनि दीक्षा प्राप्त की तथा 12 दिसम्बर 2010 में स्वगुरु के हस्तकमल से आचार्य पद पर सुशोभित हुए।

आचार्यश्री ने चारों अनुयोगों का विशेष अध्ययन किया आपके पिताजी प्रकाण्ड विद्वान थे उन्होंने भी मुनि दीक्षा प्राप्त करके सन् 2002 में बीना (म.प्र.) में समाधि प्राप्त की। विशेषता ये कि अपने पिता की समाधि उन्हीं के पुत्र आचार्यश्री ने कराई। **न्यायशास्त्र, नयशास्त्र, आध्यात्मिक शास्त्र व सिद्धान्त ग्रंथों का गुरुमुख से अध्ययन** करके हर बात पर मंथन किया। आचार्यश्री जैसी विचक्षण कला वर्तमान में किसी विरले ही साधु में देखने को मिलती है वह है काव्य शैली की कला हर काव्य पर लिखने का अधिकार रखने वाले धर्म की बात को व्यक्ति के

3

जेहन में उतार देते हैं आचार्य श्री की आवाज में ही संगीत निकलता है सभी आगम के ज्ञान के साथ काव्यकला होते हुए श्रेष्ठ प्रवचन शैली एवं निर्दोष चर्या का पालन आचार्यश्री का आकर्षक चुम्बकीय व्यक्तित्व है।

'' जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि'' लेकिन आचार्यश्री की बात है **''जहाँ न पहुँचे कवि वहाँ पहुँचे अनुभवी''** हर बात को अनुभव की कसौटी पर परखकर स्वीकार करने वाले हमेशा आगम की बात को ही श्रद्धान करने वाले, जिनकी भाषा शैली विवादों से रहित, पंथों से दूर केवल वीतरागी और निर्ग्रन्थ भाषा को बोलने वाले, जैन धर्म के मूलग्रंथ श्री धवलाजी, जय धवलाजी, महाधवलाजी का गुरुमुख से अध्ययन करने वाले करणानुयोग पर प्रकाण्ड विद्वत्तता रखने वाले प.पू आचार्यश्री के ऊपर लोगों ने पी.एच.डी. करने को कहा तो आचार्यश्री ने उस समय मना कर दिया क्यूँकि उस समय आचार्यश्री, ऐलक (सन् 1996 में) थे काव्य क्षेत्र में **लगभग 800 कविताएँ, 500 भजन, 300 गज़लें, 2000 मुक्तक, 2000 पहेलियाँ (पद्य में) दस तरह का हिन्दी में भक्तमर, जीवन चलती साँस यहाँ, जीवन जलता दिया यहाँ, गुरू चरणों की धूल यहाँ, जीवन है पानी की बूँद** आदि दस तरह के ऐसे गीतों पर **लगभग 2200 छंद** लिख चुके हैं जो पूरे भारत में प्रसिद्ध हो चुके हैं हर संगीतकार एवं साधु साध्वी जिन्हें गाकर व सुनकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं एवं सभी स्तुतियों के पद्यानुवाद, कई पूजायें व कई ग्रंथों के पद्यानुवाद किये हैं मुनि श्री ने **णमोकार महामंत्र को अंग्रेजी में** ऐसा लिखा है जिसे णमोकार मंत्र की तरह गाया जाता है एवं उसकी महिमा भी अंग्रेजी में गीत की तरह लिखी है वीतराग स्तोत्र एवं कई भजन भी अंग्रेजी में लिखे एवं 5 पुस्तकें भी अंग्रेजी में लिखी हैं।

4

आचार्यश्री के मामाजी कलेक्टर और प्रोफेसर हैं चाचाजी डॉक्टर और बैंक ऑफिसर है जीजाजी अनुसंधान अधिकारी दिल्ली एवं कई भाई सर्विस में हैं लेकिन आचार्यश्री का पूरा खानदान सोनगढ़ परम्परा का है केवल मुनिश्री के परिवार को छोड़कर।

आचार्यश्री का संस्कृत भाषा पर अच्छा वर्चस्व है शब्द विज्ञान जिन्होंने आत्मसात् किया है हिन्दी–अंग्रेजी, उर्दू, प्राकृत, संस्कृत और ज्योतिष भाषा का ज्ञान रखने वाले गुरुदेव ने कई पुस्तकों को लिखा है आकर्षक शैली वर्तमान परिवेश को प्रभावित करने वाली है। आचार्यश्री से प्रभावित होकर कई लोग दीक्षा ले चुके हैं और कई लोग ब्र.व्रत लेकर साधनारत हैं। आचार्यश्री सभी संघों से मिलकर अपनी विशेष चर्या की और तार्किक एवं मार्मिक ज्ञान की अलग छाप छोड़कर आते हैं। आचार्यश्री का भक्तामर और पूजन शिविर आज भी अद्वितीय बना हुआ है ऐसा भक्तामर शिविर पूर्व में किन्हीं भी साधुओं के द्वारा प्रतिपादित नहीं किया गया। आचार्यश्री को भक्तामर स्तोत्र व जिनेन्द्र पूजन का कोच (विशेषज्ञ) कहा जाता है।

आचार्यश्री के सभी वर्षायोग ऐतिहासिक रहे हैं लेकिन 2016 में फिरोजाबाद का वर्षायोग स्वर्ण अक्षरों से लिखा जाने वाला है उसकी स्मृतियाँ व्यक्ति जीवन भर तक स्मरण करता ही रहेगा आचार्यश्री के भक्तामर शिविर और प्रवचन शैली की अनूठी मिशाल है हमारी समाज उनके चरणों में नममस्तक होती हुई आचार्यश्री के रत्नत्रय की उत्तरोत्तर वृद्धि की शुभकामना करती है और मन वचन काय से त्रिवार नमोऽस्तु करती है।

सकल दिगम्बर जैन समाज
फिरोजाबाद (उ.प्र.)

5

रचयिता की कलम से

काव्य स्रजन की कला बहुत ही श्रेष्ठ कला है ये कला आत्मविभोर कर सकती है ये कला अपनी बात को बड़े मीठे ढ़ंग से बहुत आराम से कह सकती है सबको अपनी ओर आकर्षित कर सकती है कवि काव्य स्रजन में अपने समय का सदुपयोग करता है कविता के विषय को पहले अनुभूत करता है तत्पश्चात् काव्य कला और विद्वत्तता के बल पर उसे शब्दों में गूँथकर छंद बनाता है यह कला God gift कही जाती है ऐसी काव्यस्रजन की शक्ति हमें अपने गुरुदेव प. पू.आचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के आशीर्वाद और उनके प्रोत्साहन से प्राप्त हुई।

धार्मिक कविता लिखना, व्यंग्य लिखना, गीत ग़ज़ल लिखना आदि ये सब हमारे आत्मरंजन के साधन बन गये। हमने यह अनुभव किया कि काव्यरस से जीवन में स्वस्थता प्रकट होती है कोई भजन गाने पर आत्मिक शांति स्वयमेव अनुभूत होती है। साधू को काव्यकला हो तो इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है क्योंकि उसका मन निरंतर धर्म की बातों को छंदों में गूँथने में लगा रहता है।

हमारा काव्य रचना का ध्येय सिर्फ इतना ही है कि सारे लोग उन रचनाओं को पढ़कर गुनगुनायें और आनंदित होकर अपने जीवन में निर्मलता को प्राप्त कर सफल बनावें। इन कविताओं को बनाने में सारा श्रेय हमारे गुरुवर का है हम तो गुरु की कृपा से शब्दों को गूँथ देते हैं ऐसे श्रद्धेय गुरुवर के चरणों में त्रय भक्तियुत विनम्र नमोऽस्तु–3

Acharya Vinamra Sagar

6

Namokar Mahamantra

I bow to all Arihantas.
I bow to all Siddhas.
I bow to all Acharyas.
I bow to all Upadhyayas.
I bow to all Saints in the world

This Namokar mantra about to destroy all sins.
And the first is auspicious in the all auspicious

Acharya Vinamra Sagar

7

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

ऐसो पंच णमोयारो सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं।।

8

अभिवंदन

नशाया घातिकर्मों को वे सब अरिहंत को वंदन,
निराकारी हैं अविनाशी उन्हीं सब सिद्ध को वंदन।
नमन आचार्य पाठक को जो दिक्षा दें पढ़ाते हैं,
हैं सच्चे साधु दुनियाँ में नमन सबको है अभिवंदन॥

महावीर

वचन दिल से निभाये जो, उसे प्रणवीर कहते हैं,
न घबराए कभी रण में, उसे रणधीर कहते हैं ।
सरल है जीतना दुनियाँ, कठिन खुद पर विजय पाना,
जो खुद को जीत ले खुद से, उसे महावीर कहते हैं ॥

आवाज़ दे देना

मेरे गुरुवर ! मुझे पिच्छी से आशीर्वाद दे देना,
चलूँ अपने हि कदमों से हुनर वो साथ दे देना ।
दिले हसरत यही हरदम तेरा दीदार हो दिल में,
समाधि के समय आकर मुझे आवाज दे देना ।।

विश्वास दे देना

मेरे गुरुवर मुझे मुस्कान का मधुमास दे देना,
मेरे दिल में झलक देकर नया अहसास दे देना।
तेरे आशीष से जिंदा रहा अब तक मैं दुनिया में,
मुझे जीने का जीवन में परम विश्वास दे देना॥

दम नहीं होता

मेरे गुरुवर तेरा जलवा कहीं भी कम नहीं होता,
तेरा हो साथ गर मुझको कभी भी गम नहीं होता।
तेरी नज़रें गमे दिल को हँसी इतना बनाती हैं,
करे गम दिल मैं पैदा गम किसी में दम नहीं होता॥

रज़ा की सज़ा

मेरे दिल में रज़ा क्या है ये गुरुवर ! को बताऊँगा,
रज़ा की क्या सजा होगी पता गुरु ! से लगाऊँगा।
गुरु के बोल अमृत के समां होते हैं दुनियाँ में,
गुरु का नाम लेकर के खुदा के पास जाऊँगा ॥

दरिया दिल

गुरु के हाथ से आशीष जब जब भी मिला करता,
हृदय मेरा स्वयं गुलसा यहाँ तब तब खिला करता।
तहे-दिल से जो लेता नाम गुरु का पार हो जाता
गुरु की सद् कृपा से ही ये दरिया दिल हुआ करता॥

मंज़र-खंज़र-शंकर

सुबह की लालिमा हमको दिखाती शाम का मंज़र,
किसी के हाथ में गुल हैं किसी के हाथ में खंज़र।
खुशी है चंद दिन की गम बहुत लम्बी उमर वाला,
करो वह काम जीवन में मिलें प्रभु रामजी शंकर ॥

मोक्ष का द्वार

प्रभु के गीत गाने में हृदय को खोल बोलेगा,
वही भगवान की दौलत का सारा राज खोलेगा।
स्वयं जिसने भी सम्यक् बैंक में खाता यहाँ खोला,
वही बंदा मुनि बनकर मोक्ष का द्वार खोलेगा॥

इनायत

गुरु की गर इनायत हो तो हर गम फूल बन जाता,
बड़ा हो हादसा वह भी चरण की धूल बन जाता ।
सभी ताकत गुरु के सामने नाकाम हो जाती,
हर इक प्रतिकूल सा मौसम स्वयं अनुकूल बन जाता ॥

कशिश-कोशिश

खुदा की हर इबादत में ये आशिक दिल नज़र आये,
कशिश ऐसी करो दिल में कि कोशिश काम आ जाये।
कभी हारो नहीं दिल से अगर मंज़िल को पाना हैं,
वही कुव्वत करो पैदा कि मंज़िल पास आ जाये ॥

दर्द दवा नहीं

किसी के दर्द में हम खुश कभी भी रह नहीं सकते,
खुदा गुरु की करे निंदा कभी ये सह नहीं सकते।
खुशी से दर्द पी लेंगे यहाँ मज़हब की खातिर हम,
मगर उस दर्द को यारो दवा हम कह नहीं सकते॥

ज़िदगी खुदा के नाम

सुबह के बाद ही यारो यहाँ पर शाम होती है,
ज़िदंगी हो गुनाहों में तो खुद बदनाम होती है।
गुज़रती है इबादत में हमारी जिदंगी जितनी,
वही तो जिदंगी अपनी खुदा के नाम होती है।।

चढ़ते नहीं देखा

परिंदो को यहाँ हमने कभी लड़ते नहीं देखा
मदरसे में कभी उनको यहाँ पढ़ते नहीं देखा ।
ये इंसां गम न सह पाता तो फाँसी पर लटक जाता
मगर फंदे पे पक्षी को कभी चढ़ते नहीं देखा ॥

सहारा हो तो तेरा हो

मैं गिर जाऊँ समंदर में सहारा हो तो तेरा हो,
सफ़ीना पाके बच जाऊँ किनारा हो तो तेरा हो।
मेरे अंतिम समय जब आँख मुँद जाये मेरी यारब,
खुलें जब भी मेरी आँखें नज़ारा हो तो तेरा हो॥

अंदाज

दिले - खामोश शोलों का हमीं अंदाज़ खो बैठे,
जिये हैं शोरगुल में हम सही आवाज़ खो बैठे ।
हमें शर्मिंदगी रह -रह हमेशा ही सताती है,
हमीं ज़िंदादिली औकात अपनी आज खो बैठे ।।

कौन है यारो

यहाँ खुद को खुदा जैसा समझता कौन है यारो ?
स्वयं सा दर्द गैरों का समझता कौन है यारो ?
हर इक दिल को पता है सच का कैसा आइना होता,
मगर दिल को खुदा का घर समझता कौन है यारो ?

अपना नज़र आये

किसी खतरे को देखें तो हमें घटना नज़र आये,
हो दुश्मन सामने उसमे हमें अपना नज़र आये ।
मेरी आँखों में यारब अब वही तासीर हो जाये,
मैं दुनियाँ में जिधर देखूँ सभी अपना नज़र आये ।।

रस्ता बदलते हैं

जहर का घूँट पीकर के जो अमृत को उगलते हैं,
बहुत ही रोशनी भरकर उन्हीं के दीप जलते हैं।
यहाँ पानी की धारा संग बहना भी क्या बहना है,
जो धारा काटकर बहते वही रस्ता बदलते हैं ॥

यहाँ हँसके

जिन्होने ख़ार पर जीवन बिताया है यहाँ हँसके,
उन्हें ही फूल बनकरके वो आये खार हैं हँसके ।
फूल में भूलते खुद को तो गुल ही खार बन जाते,
जो खुद को याद रखते हैं वही जीते यहाँ हँसके ।।

गुज़ारिश है

गुज़ारिश है यहाँ काँटों औ शोलों पर गुज़र जाना,
मगर फूलों पे चलना तो वहाँ पर तुम सँभल जाना।
मुझे मालुम है काँटों से भी गहरे घाव फूलों में,
हो गर फूलों का मौसम तो विचारों से बदल जाना॥

मंदिर नहीं होते

न होते शूल तो इतने सुमन सुंदर नहीं होते,
न होती आग दुनियाँ में समंदर भी नहीं होते ।
न होते संत धरती पर तो दुनियाँ ख़ाक हो जाती,
न होते पाप तो यारो यहाँ मंदिर नहीं होते ॥

आपके हम हैं

सहारा आप हैं गुरुवर! सहारे आपके हम हैं,
समंदर आप हैं गुरुवर! किनारे आपके हम हैं ।
तेरा आशीष हो तो हँसके हम हर गम को सह लेंगे,
मेरे सब कुछ हो गुरुवर तुम इशारे आपके हम हैं ।।

ख़ाक छानी

बड़े ही शान से आकर यहाँ दुनियाँ बनाते हैं,
यहाँ क्या काम करने हम हैं आये भूल जाते हैं ।
बड़ों ने उम्र भर आकर यहाँ पर ख़ाक छानी है,
मिला क्या, उनकी आखों के हमें आँसू बताते हैं ।।

शहद सी वाणी

वही वाणी शहद सी है असर दिल पर जो कर जाये,
बने जो काम हाथों से वो सब बातों से बन जाये ।
बहुत मीठा हो दिल का भाव अपनी मिष्ठ वाणी में,
कोई गिरता हुआ सुनकर स्वयं खुद ही संभल जाये ॥

नाम होते हैं

जहाँ पुरुषार्थ हो दिल में वहीं पर राम होते हैं,
गुमानी बनके जीते हैं वहीं गुमनाम होते हैं ।
जो गैरों को अंधेरा दें उन्हें मिलता अंधेरा है,
उजालों के लिए उजले दिये सब नाम होते हैं ।।

पा नहीं सकते

नज़र अंदाज करके हम यहाँ कुछ पा नहीं सकते,
न लय सरगम हो अंदाजा तो फिर हम गा नहीं सकते।
किन्ही गैरों के कंधे पर यहाँ मरघट तो जाते हैं,
मगर मंज़िल सहारों से कभी भी पा नहीं सकते ॥

नज़र

नज़ाकत पर नज़र डालो सभी कुछ जान जाओगे,
नज़र सब जानती यारो ये खुद ही मान जाओगे ।
मेरी औकात हो जैसी नज़र वैसी नज़र आती,
नज़ारों से नज़र बनती नज़र से जान जाओगे ॥

हिकमत

करिश्मा हो मेरी आँखों सही मंज़र दिखाई दे,
वो हिकमत दे मुझे यारब खुदा अंदर दिखाई दे।
मेरी आँखों में खिलती सी वही तासीर हो जाये,
अगर मैं बूँद भी देखूँ समंदर ही दिखाई दे ॥

तज दें

गुनाहों से अगर बचना व्यसन करना सभी तज दे,
यहाँ पर मौत से बचना कषायें को सभी तज दे।
निरंजन का तुम्हें दीदार करना है दिले यारो,
तो संयम ले सभी कर्मों को पहले तोड़कर तज दे॥

हमारे अश्क

हमारे अश्क गैरों के दुखो में काम आ जाएँ,
है सच क्या बात होठों से स्वयं बाहर निकल आये।
अधर पे हो हँसी हरदम बहे गैरों के अधरों पर,
मेरा दिल हादसे गम को सहज बातों में सह जाये॥

औकात

यहाँ औकात में रहकर करो औकात की बातें,
न कहता है यहाँ कोई दिल -ए हालात की बातें ।
हमेशा दिल किसी के दिल की बातों से पिघलता है,
खुदा से बात करना है तो कर जज़्बात की बातें ।।

इंसानियत

हमें इंसानियत से बढ़ न कोई धर्म दिखता है,
इसी में संप्रदायों का सभी अस्तित्व मिलता है।
हमेशा आदमी ही आदमी के काम आता है,
इसी इंसान में यारो खुदा का नूर मिलता है॥

मुकिल है

छुपा लो बात को सबसे, छुपाना दिल से मुश्किल है,
ये तन कपड़ों से छिप जाता छुपाना कपड़े मुश्किल है।
बहुत कुछ शब्द कहते हैं मगर चेहरा सभी कहता,
बात दिल की ये चेहरे से छुपाना बहुत मुश्किल है ॥

आँसू

अगर आँसू नहीं होते तो दिल पत्थर से हो जाते,
जो पत्थर दिल थे दुनियाँ में वो कैसे फिर पिघल पाते।
न दिल का मैल धुल पाता तो कैसे साफ दिल होता,
हर इक दिल को जलाने में ये आँसू आग बन जाते॥

आँसू

किसी के दिल को पिघलाकर लगाते आग हैं आँसू,
कहीं पर दर्द बन करके बुझाते आग हैं आँसू ।
न कोई ये बता सकता ये आँसू किस तरह के हैं,
फ़कत बस दिल को है मालुम उमड़ते राग में आँसू ।।

पाप की कमाई

बनी दीवार रेतों की न ज्यादा देर चलती है,
बिना डीजल के गाड़ी भी न ज्यादा देर चलती है।
भले तिर जाये पत्थर की जहां में नाव पर यारो,
कमाई पाप की घर में न ज्यादा देर फलती है ॥

भाषा नहीं होती

नदी की अस्मिता तो है कोई आशा नहीं होती,
लहर धारा तटों के बीच जिज्ञासा नहीं होती ।
समंदर में नदी अपनी मिटाती अस्मिता खोकर,
समर्पण की कोई शर्तें कोई भाषा नहीं होती ॥

आँसू

किसी की आँख के आँसू महाभारत कराते हैं,
कहीं मोती से बन करके दर्द दिल का बताते हैं।
न होती जात आँसू की न दिखता फर्क अश्कों में,
कहीं आँसू बनें सीता और रामायण रचाते हैं ॥

वफ़ा-बे-वफ़ा

वफा सब ही दिखाते हैं निकलते बे-वफ़ा यारो,
न कोई है यहाँ मेरा तो हम किससे खफ़ा यारो ।
मेरी मानो वफा दिल से खफ़ा कर दो दफा इक तुम,
तभी इस ज़िंदगी में हो तुम्हें अच्छी नफा यारो ॥

साँप हैं निकले

जिनमें पुण्य समझा था वहीं पर पाप हैं निकले,
जिन्हें वरदान जाना था वे ही अभिशाप हैं निकले।
लगाया था गले जिनको समझकर मित्र अपना ही,
लोग वे आस्तीनों के यहाँ पर साँप हैं निकले ॥

दर्द में आँसू

कोई पीड़ा से रिश्ते को यहाँ पक्का किया करता,
कोई गद्यों में कविता को सहजता से लिखा करता।
किसी के दर्द में आँसू बहाना धर्म लगता है,
कभी गम को छिपाने को अश्क दिल से पिया करता॥

जच जाये

वो सच को क्या पचाएगा जिसे जब झूठ पच जाये,
उसे क्यों गम लगे दुनियाँ जो खुद दुनियाँ में रच जाये।
विचार अपना कदम अपना सफ़र अपना शहर अपना,
निकलता है वहीं रस्ता मेरे दिल को जो जच जाये ॥

इकदफ़ा देखो

हृदय की नफ़रतें दिल से हटाकर इक दफ़ा देखो,
ये दिल दरिया है इसको तुम बहाकर इक दफ़ा देखो।
अगर ये ज़िंदगी है रात सबेरा भी तो जीवन है,
जरा पर्दा ये नज़रों से उठाकर इकदफ़ा देखो ॥

नहीं सकते

जो मेहनत से यहाँ डरते वो कुछ भी पा नहीं सकते,
भजन मिल जाएँगे उनको मगर वो गा नहीं सकते।
परिश्रम का बहुत मीठा बताते हैं यहाँ पर फल,
जिन्हें आलस ही प्यारा है वो मंज़िल पा नहीं सकते॥

क्या लिक्खूँ

नया लिक्खूँ मैं क्या लिक्खूँ समझ में ये नहीं आता,
खुदा लिक्खूँ या खुद लिक्खूँ नहीं निर्णय ये हो पाता।
कलम क्या है लिखे तो वेग से लिखती ही जाती है,
ये करता कौन है आकर समझ मेरे नहीं आता ॥

रग - रग में

है क्या अपना पराया क्या न अब तक जान पाया है
मेरा साथी यहाँ बन कौन आँखों में समाया है ।
बुलंदी हौसला देकर बना है हम सफर मेरा,
उसी को जान ले भौंदू जो रग - रग में समाया है ।।

खुशी के अश्क

खुशी के अश्क बन करके किसी की आँख में आऊँ,
जिगर का गम निकल करके कभी मैं आँख में जाऊँ।
मैं आँसू हूँ न निकलूँ जो गमों का बोझ बढ़ जाये,
कि पत्थर भी पिघल जाये यहाँ जब सामने आऊँ ।।

प्यार से जीतो

हिरण का जीतना हो मन मधुर झंकार से जीतो,
कली को जीतना हो तो मधुर व्यवहार से जीतो।
यहाँ ताकत से जीतोगे तो उससे हार जाओगे,
किसी को जीतना है तो हृदय के प्यार से जीतो॥

देखो

सभी में तुम यहाँ परमात्मा के रूप को देखो,
उन्हें अपना बनाकरके यहाँ सम्मान से देखो ।
अहिंसा धर्म का सबको यही संदेश प्यारा है,
अगर कुछ दे नहीं सकते तो केवल प्यार से देखो ।।

अपने घर की बात

पराई भूल अणु जैसी पहाड़ों सी बताते हो,
हो खुद की पर्वतों जैसी न चर्चा भी चलाते हो।
हमेशा दूसरों के घर उजड़ते देखते आये,
न अपने घर की बातों को कभी सड़कों पे लाते हो॥

नजराये

वहीं पानी ठहरता है जहाँ गहरा समंदर हो,
खुदा रहता उसी दिल में जो दिल से साफ सुंदर हो।
हृदय की मापना गहराइयाँ तो दिल में डूबो तुम,
सभी कुछ साफ नज़राये जो तेरे दिल के अंदर हो॥

मिलकर

न मन का दिल से हो रिश्ता तो मिट जायेगा तू आकर,
तू उड़ना आसमां छोड़े जमीं पर तब जुड़े जाकर ।
अँधेरा मन उजाले दिल से जुड़ जाये तो हो रौशन,
ज़मीर अपना खिलाना है तो दिल वालों से जा मिलकर ॥

असर

अँधेरी रात में रस्ता नज़र कोई नहीं आता,
हो फूटी आँख गर अपनी सफर कोई न नज़राता।
समझदारी की बातों की समझ फिर भी नहीं आई,
समझ के बिन ये जीवन में असर कोई नहीं आता॥

सही राहें

कोई हमको यहाँ सच्ची न राहों को दिखाता है,
किसी से राह पूँछो तो हमें उल्टा भुलाता है ।
बड़ी मुश्किल से गुरुओं का समागम प्राप्त होता है,
गुरु सच्चा है हमराही सही राहें बताता है ॥

जंजाल

बड़े - बूढ़े बताते हैं ये दुनियाँ एक जंजाल,
हैं मालामाल जर से पर सभी दिल से हैं कंगाल।
मिले मौका तो ये आदम छुरी भी भौंक देता है,
तभी खुशहाल से इंसां यहाँ बदला है बदहाल ॥

परमार्थ

न होता स्वार्थ संतो में उन्हे परमार्थ प्यारा है,
न कर्तव में करें आलस उन्हें पुरुषार्थ प्यारा है।
बिना सम्यक्त्व के जीवन में कोई सुख नहीं यारो,
न हो सम्यक्त्व की धारा तो होता व्यर्थ सारा है ॥

पैनी नज़र

जगाता है जो हमदर्दी वही आगी लगाता है,
फँसाता जाल में लेकिन ये लगता है निभाता है।
समझना ये सरल तो है मगर पहिले सरल नहिं बन,
नज़र पैनी बनाकर देख सब जेहन में आता है॥

मंजर - बे - घर

कहीं खंजर का मंजर है कहीं पत्थर का है मंजर,
यहाँ हर आदमी गम में हमें आता नज़र अक्सर ।
गमे-माहौल से मुश्किल निकलना है बहुत यारो,
रहे घर में मगर फिर भी हर इक इंसान है बे - घर ॥

दर्द देकर ख़ुशी नहीं

किसी को दर्द दे कोई ख़ुशी में जी नहीं सकता,
ज़हर देकर के अमृत को कभी भी पी नहीं सकता।
जो अमृत बाँटते हरदम उन्हें अमृत का प्याला है,
जो फाड़े ग़ैर के कपड़े वो अपने सीं नहीं सकता॥

किनारा

किसी अंधे को आँखों का सहारा मिल गया होता,
उसे जीवन नया जग में दुबारा मिल गया होता।
गुरु का हर इशारा शिष्य को ऊपर उठाता है,
गुरु गर दिल में होते तो किनारा मिल गया होता॥

मौजूद

सफ़र कैसे हुआ है खत्म अब तक मैं नहीं जाना,
जिया है कौन मुझमें ही न हमने आज तक जाना।
रहा वो साथ मेरे पर हमीं भूले रहे उसको,
वो हममें ही रहा मौजूद पर हमने न कुछ जाना।।

ये घरौंदा

हुआ मैं बेअसर कैसे नहीं ये आज तक जाना ?
इरादे क्यों हुए कच्चे नहीं अब तक ये पहिचाना ?
ख्याल आया तभी जब जिस्म मेरा टूटकर बिखरा
क्यूँ अब तक इस घरौंदे को नहीं मिट्टी का क्यों माना ?

सकता है

ये मावन ही यहाँ ऐसा जो बँधन तोड़ सकता है,
यहाँ जैसा भी चाहे वो हृदय को मोड़ सकता है।
ये सुनते हैं किसी के दिल बड़ी मुश्किल से जुड़ते हैं,
हजारों वर्ष के टूटे दिलों को जोड़ सकता है॥

नई रंगत

कहें किससे मिरे घर में नई सी रोशनी लाओ,
चिराग अपना नई लौ से दिले दीपक जला जाओ।
हटा दो भूल को दिल से नये अरमान को लेकर,
नया जीवन नई रंगत नया हर काम कर जाओ॥

चलना है

ये सूरज से यहाँ सीखो हमें चलना हि चलना है,
हवाओं से यहाँ सीखो हमें बहते हि रहना है ।
सभी को सीख मिलती है हमें खुद ही सँभलना है,
लहर सागर की कहती है हमें हरदम मचलना है ॥

गैरों की खातिर

किसी के दर्द में रोए वही दिल धर्म के काबिल,
सहारा दे जो गिरते को उसी का दिल है ज़िंदादिल।
यहाँ खुदगर्ज़ लोगों को खुदा खुद ही डुबाता है,
जिये गैरों की खातिर जो वही पाता यहाँ साहिल॥

उज़ाले की किरण

धरम की आड़ में मानव यहाँ पर पाप कर लेता,
पुण्य के थान पर यारो बहुत से पाप कर लेता ।
उजाले की किरण के पास सब कुछ साफ दिखता है,
छिपाता है जिसे आकर खुदा पहिले खबर लेता ॥

मुस्कुराता हूँ

मैं दुश्मन के सभी वारों पे हरदम मुस्कुराता हूँ,
थकाकर उसकी ताकत को मैं खुद ताकत को पाता हूँ।
नहीं परवाह मेरा जिस्म हो जाए भले छलनी,
मगर किरदार से हर दाग मैं अपना बचाता हूँ ॥

कुत्तो का सरदार

यहाँ कुत्ते को पाले जो उसी का नाम है कुत्ता,
बहिन के घर अगर भाई गुज़ारे दिन तो है कुत्ता।
जँवाई सास के घर हो उसे कुत्ता सभी जानो,
रहे बेटी के घर आकर, वही सरदार है कुत्ता॥

हँसना स्वस्थता

वही अच्छे यहाँ लगते जो हँसते खिलखिलाते हैं,
जो गाते हैं भजन प्रभु के वही खुशियों को पाते हैं।
तरसता है यहाँ हर आदमी हँसने के मौसम को,
यहाँ है स्वस्थता हँसना सभी डॉक्टर बताते हैं ॥

विश्वास बन जाऊँ

मुझे ऐसा बना दो मैं तुम्हारा दास बन जाऊँ,
तेरी सेवा करूँ हरदम तुम्हारा खास बन जाऊँ।
तुम्हारे साथ मैं ऐसे रहूँ ज्यों दूध और पानी,
न इकपल साथ छोड़ूँ मैं नया विश्वास बन जाऊँ॥

अंगारों सा जीवन

यहाँ जो फूल सा जीता वही आकर महकता है,
है खारों सा अगर जीवन तो जीवन भर बहकता है।
जो अपने ही चिरागे दिल को रोशन भी न कर पाया,
वो अंगारों सा जीवन में धधकता है दहकता है ॥

मानव को

नहीं विश्वास होता है धरम पर आज मानव को
न निज में वास होता तो हो दुख आभास मानव को।
तहे दिल से करें अनुभव तभी मज़हब समझ आये,
सिर्फ ये धर्म ही देता सभी कुछ आज मानव को ॥

असर यारो

उन्हीं पाँवों की कीमत है कि जिनमें है सफ़र यारो,
जो मंज़र खींच ले दिल को उसी में है गदर यारो।
करे सज़्दा मुरादे दिल की पूरी हों यहाँ जल्दी,
तभी समझो इबादत में बहुत ही है असर यारो॥

वही दिल है

बदलते गम के मंज़र पर सहन करते वही दिल है,
चाहे मासूम हो कोई ज़वानी में वही दिल है ।
नज़ारे हैं ज़माने के नज़ारों को दिखाने को,
नज़र में दम रखो हरदम समझने को वही दिल है ।।

खुशी महसूस

चमकती गर्म रेतों पर बड़ा ही भ्रम नज़र आता,
हवा में लहलहाती धूप में पानी नज़र आता ।
यहाँ वैसे ही विषयों में खुशी महसूस होती है,
मगर इकपल खुशी तन की बहुत पल गम नज़र आता ॥

बता तो दो

मैं मंज़िल का पता किससे यहाँ पूछूँ बता तो दो,
ख़ुदा ने क्या कहा गुरुवर ! मुझे उसको सुना तो दो।
मुझे मंज़िल को पाने में तुम्हीं अंजाम दोगे, पर
बुलंदी हौंसलों में कब करोगे ये बता तो दो ॥

आँसू निकलते हैं

खुदा की याद में जब जब यहाँ आँसू निकलते हैं,
नया अहसास होता है तभी हम खुद सँभलते है।
बिना रोए न बच्चे को पिलाती दूध माँ यारो,
तभी तो उसकी यादों में हृदय के दीप जलते हैं ।।

करता हूँ

मैं तन्हा में खुदा तेरी हमेशा याद करता हूँ,
नहीं दीदार गर तेरा तो मैं फरियाद करता हूँ।
दिले रूहानी ताकत से तू दिल में ही नज़र आता,
न तेरी रूह नज़राए तो दिल नाशाद करता हूँ।।

सामने बैठूँ

मेरी हसरत यही गुरुवर ! मैं तेरे सामने बैठूँ,
मुखातिब हो यहाँ तुझसे मैं तेरा हाल भी पूछूँ ।
तुझे दिल में बिठाकरके सफ़ल हर काम को कर लूँ,
रहूँ ताउम्र चरणों में न मरते दम तुम्हें भूलूँ ॥

नया गुलशन

हमारी आस्था खुद ही यहाँ जलवा दिखायेगी,
खुदा को देख ले सब में वही तासीर लाएगी ।
न रस्ता सूझता जिनको न मंज़िल ही नज़र आती,
उन्हीं आखों को रौशन कर नया गुलशन बनायेगी ।।

पक्का है

अशांति मिट गई दिल की तो तेरा स्वर्ग पक्का है,
बुराई मिट गई दिल से तो तेरा मोक्ष पक्का है।
यहाँ धन के लिए जीवन गँवाते हैं बहुत यारो,
न चंचलता रही मन में तो मुक्तिद्वार पक्का है॥

करूँगा क्या

झलक जिसमें न तेरी हो नज़ारों को करूँगा क्या ?
जहां में बे-वफा लेकर सहारों को करूँगा क्या ?
न जिसमें फूल सा जीवन महकती हों नहीं ख़ुशियाँ
मैं दौलत ऐश पाकर के बहारों को करूँगा क्या ?

नहीं बनती

कथाओं को सुनाने से व्यथा दिल की नहीं मिटती,
अश्क आँखों के पीने से प्यास कोई नहीं बुझती।
लोग गैरों की बातों को यहाँ अपनी बताते हैं,
किसी की बात कहने से धाक अपनी नहीं बनती॥

तत्त्व की बात

तत्त्व की बात लोगों को समझ में अब नहीं आतीं,
जिनागम की सही बातें किसी के मन नहीं भातीं।
मिले कैसे उन्हें सच ज्ञान की दिल में लहर यारो,
यहाँ जब दिल में जिनवर की नहीं बातें उतर पातीं॥

अज़नबी

मेरी तबियत सभी को देखकर मायूस होती है,
हुस्न अच्छा मगर दिल की कमी महसूस होती है।
जिधर देखा उधर हर आदमी दीगर[1] नज़र आता,
मुसीबत में ये दुनियाँ अज़नबी महसूस होती है ॥

1 - पराया

सम्यक्त्व

भयंकर तप करो फिर भी नहीं सम्यक्त्व होता है,
करोड़ो शास्त्र को पढ़ लो नहीं सम्यक्त्व होता है।
इबादत हो नहीं सच्ची तो सच नहिं हो सके हासिल,
खुदा की रूह को जानें तो खुद सम्यक्त्व होता है॥

उभरना - मरना

यहाँ आकर हमें हरपल उभरना ही उभरना है,
गमों के पल में भी हमको ख़ुशी में ही गुज़रना है।
नया अहसास जीवन में न हम आकरके कर पायें,
तो सारी उम्र जीकर भी यहाँ मरना हि मरना है॥

तपाये बिन

मेरी किश्मत में फूलों का बिछौना गर यहाँ होता,
तो यह सच है मैं भूलों का खिलौना भी यहाँ होता।
बिना ठोकर के कोई भी सँभलता हैं नहीं यारो,
तपाये बिन न कोई भी खरा सोना यहाँ होता ॥

तरसते हैं

कहीं से तीर लगता है जख्म तब ही उभरते हैं,
भरे बादल गगन में हों जमीं पर वो बरसते हैं।
ग़ज़ब हालात दिखते हैं जमाने में हमें यारो,
कहीं जीने को मरते हैं कहीं मरने तरसते हैं ।।

वो छाया

कड़कती धूप में अपनी हमें छाया नज़र आती,
मगर छायों में वो छाया नहीं हमको नज़र आती।
ये समझा गम के साये में खुदा छाया दिखाता है,
जहाँ गम दूर होता है वो छाया खुद नज़र आती ॥

पश्चाताप

रखोगे हाथ गर दिल पर कसम जब एक खाओगे,
ये सच है तुम उसे दिल से यहाँ हरदम निभाओगे ।
यहाँ पर भूलवश सौगन्ध तुमसे टूट जाये तो,
दुखी होकर के पश्चाताप लेकर गम मिटाओगे ।।

बात करते हैं

चमन को जो मिटाने की यहाँ पर बात करते हैं,
वही इंसां ठिकाने की जहां में बात करते हैं ।
जला हो जो वही दिल को जलाने की यहाँ कहता,
जगे, गाफिल ज़गाने की हमेशा बात करते हैं ॥

गुमानी बनके

ज़माने की ख़ुशी पाने मिटाया आशियाँ अपना,
किये पैदा हज़ारों गम रहा ये कारवां अपना ।
गमे तारीक में ये दिल न ख़ुद को खोज ही पाया,
गुलिश्तां कर दिया वीरां गुमानी बनके दिल अपना ।।

बसेरा

कि जिसके दिल में यारब का हमेशा ही बसेरा हो,
यहाँ पर जगमगाते दीप सा उसमें सबेरा हो ।
ख़ुदा की याद में जो दिल कभी भी भीग न पाया,
यकीं कर उसके घर हरदम अँधेरा ही अँधेरा हो ॥

अब ग़ज़ल कोई

हँसी कितना है ये मौसम सुनाओ अब ग़ज़ल कोई,
रहे दिल में न कोई गम सुनाओ अब ग़ज़ल कोई।
यहाँ भी भीगती आँखें यही कहती नज़र आतीं,
उठाने आँख के आँसू सुनाओ अब गज़ल कोई ॥

मरना पड़ेगा ही

जो दीपक जल गया यारो उसे बुझाना पड़ेगा ही,
अकड़ कितनी दिखालो पर तुम्हें झुकना पड़ेगा ही।
जरा सी जिंदगी पाकर न इतराओ यहाँ इतना,
मिला गर जन्म तो निश्चित तुझे मरना पड़ेगा ही ॥

दहशत में ज़माना

दिल-ए-अरहंत को लिखकर नई किश्मत बनाई है,
गुरु निर्ग्रन्थ को लखकर यहाँ अस्मत बचाई है ।
ज़माने में यहाँ दहशत या दहशत में ज़माना है,
स्वयं में डूबकर हमने सभी दहशत मिटाई है ।।

सरदार

लुटाया अपने हाथों से स्वयं अपना ही सुख यारो
बुझाया है चिराग अपना बढ़ाया खुद ही दुःख यारो।
तेरे घर में कोई कैसे करेगा रौशनी आकर
तू ही हकदार है घर का तू ही सरदार है यारो ॥

मुनि श्री द्वारा रचित एवं संकलित साहित्य की तालिका

1. तन्मयता की बेला – (पूजन शिविर) मूल्य 20 रु. 192 पेज
   आज की नवीन पीढ़ी के लिए विधिपूर्वक आगमानुसार भगवान की पूजन करने का सही ढंग, जिसमें भक्तामर स्तोत्र, स्वप्न फल, सूतक पातक एवं नये ढंग से मधुरमय अर्घावली
2. भक्तामर स्तोत्र – (भक्तामर शिविर) मूल्य 25 रु. 224 पेज
   शुद्ध भक्तामर स्तोत्र को सही ढंग से तोड़कर लिखा गया है जिसमें नई धुन पर सात तरह का पद्यानुवाद है, ऋद्धि मंत्र व फल विवेचन भी है।
3. दैनिक कर्तव्य – मूल्य 30 रु. 320 पेज
   श्रावक के करने योग्य सभी स्तोत्र, तत्वार्थ सूत्र सामायिक पाठादि, द्रव्य संग्रह, इष्टोपदेश आदि चौघडिया, सूतक पातक
4. भक्ति की छलक मूल्य 10 रु. 96 पेज
   90 नवीन भजन आचार्य श्री द्वारा रचित
5. समंदर की लहरें – मूल्य 10 रु. 96 पेज
   लगभग 90 भजन आचार्य श्री द्वारा रचित
6. अंतस् का पराग – मूल्य 10 रु. 96 पेज
   लगभग 90 भजन आचार्य श्री द्वारा रचित
7. आस्था के स्वर मूल्य 10 रु. 96 पेज
   लगभग 90 भजन आचार्यश्री द्वारा रचित
8. जिनसहस्र नाम स्तोत्र मूल्य 15 रु. 80 पेज
9. **Philosophy of Karma** – कर्म विज्ञान – मूल्य 15 रु.
   कर्मो का विवेचन प्रश्नोत्तर में – आचार्य श्री द्वारा अंग्रेजी में अनुवाद

10. बोलती कविताएँ – मूल्य 100 रु. 160 पेज
    आचार्य श्री द्वारा लगभग 200 स्व रचित कविताएँ साहित्यिक – धार्मिक एवं व्यंगात्मक
11. जमाने का सच– मूल्य 30 रु. 120 पेज
    आचार्य द्वारा नये नये चिंतनों का अनूठा संकलन एवं मुनि श्री के दीक्षा चित्र व उनके विशेष अनुभव
12. हकीकत का पैगाम – मूल्य 30 रु. 120 पेज
    आचार्य श्री द्वारा मंथन का निचोड़ व तर्क के आधार पर नये – नये अनूठे विचारों का संगम
13. ज़िंदगी क्या है? – मूल्य 15 रु.
    आचार्य श्री का रंगीन चित्र एवं ज़िंदगी के बारे में महत्वपूर्ण तीन प्रवचनों का संकलन
14. सच क्या है? – मूल्य 15 रु.
    तेरा पंथ–बीस पंथ और विशाल सच का स्वरूप, मूढ व मूर्ख में, भूले व भोले में अंतर – सच्चा धर्म और झूठा पंथ का अहंकार क्या है?
15. ख़ज़ाने के मोती – मूल्य 30 रु. 105 पेज
    आचार्य श्री द्वारा रचित उर्दू में गज़लें लगभग 102 सभी तर्जों में रचित, शेर व मुक्तक
16. तासीर के मंज़र – मूल्य 30 रु. 105 पेज
    आचार्य श्री द्वारा रचित उर्दू में गज़लें लगभग 102 सभी तर्जों में रचित, शेर व मुक्तक
17. What is Life – मूल्य 20 रु.
    आचार्य श्री द्वारा प्रवचन की पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद (प्रेस में)
18. What is truth – मूल्य 25 रु.
    आचार्य श्री द्वारा लिखित पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद (प्रेस में)

19. जानिये सम्यक् दीपावली – मूल्य 10 रु.
    सही तरीके से दीपावली मनाने की विधि
20. Moral Science for Children मूल्य 50 रु.
    Part I,II,III मुनि श्री द्वारा English Translation
21. English Quatation मूल्य 25 रु.
    मुनि श्री द्वारा English में रचित सूक्तियाँ (धार्मिक एवं व्यावहारिक) (प्रेस में)
22 – सामायिक पाठ –
    संस्कृत/हिंदी पद्यानुवाद व प्रतिक्रमण मूल्य 15 रु.
23. गा लो गुरु गुणगान –
    मुनि श्री द्वारा गुरूदेव के ऊपर लिखित 4 पूजन व भजन मूल्य 5 रु.
24. अपना भविष्य जानो (Know your Future)
    मुनि श्री द्वारा लिखित हिन्दी व म्दहसपी में मूल्य 15 रु. व 25 रू.
25. ऐसा क्यों ?
    युवा पीढ़ी की नई शंकाओं के तर्क सहित अनूठे और सटीक उत्तर मूल्य 15 रु.
26. अनुभूतियों के भँवर
    ग़ज़ल की तर्ज पर 100 कविताओं के मार्मिक छनद मूल्य 15 रू 112 पेज
27. ग़ज़ब की लाइनें
    गीतमय छन्द पर 100 कविताऐं मूल्य 15 रू 112 पेज
28. असरदार लाइनें
    दिल पर सीधा असर देते 100 कविताओं के छन्द मूल्य 15 रू 112 पेज
29. गुनगुनाता संदेश

    जिन 100 कविताओं में गहरा उपदेश भी छिपा है और वह भी गीतमय है मूल्य 15 रू 112 पेज
30. जब मिल जाये रे .....
    आचार्य श्री के गुरु भक्ति के ऊपर विशेष प्रवचन (काव्य युक्त) मूल्य 15 रू 54 पेज
31. कल्याण मन्दिर स्तोत्र
    कल्याण मन्दिर स्तोत्र के शिविर हेतु शुद्ध सम्पादन में प्रेषित एवं पद्यानुवाद मूल्य 15 रू 112 पेज
32. होनी अनहोनी
    जीवन है पानी की बूँद, जीवन जलता दिया यहाँ, गुरुवर का आशीष हमें, मूल्य 25 रू 192 पेज
    जीवन चलती सांस यहाँ, अंग्रेजी में भजन व सूक्तियाँ
33. स्वर्ग नरक
    स्वर्ग–नरक क्या है विशेष प्रवचन मूल्य 15 रू
34. विराग सुमन (प्रेस में)
35. विराग वन्दना (प्रेस में)
36. सच्चे ज्ञान की पहिचान (प्रेस में)

प्राप्ति स्थान

सम्यग्ज्ञान विराग विद्यापीठ भिण्ड	**श्री देवेन्द्र जैन** बड़ी बजरिया, बीना (सागर) – 07580–223344	**सीपुर समता तीर्थ धाम** सीपुर 9828613614